दुनिया
की
तख़लीक़

duniyā kī taḳhlīq

Creation

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: https://sweetpublishing.com,
R. Gunther (www.lambsongs.co.nz)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

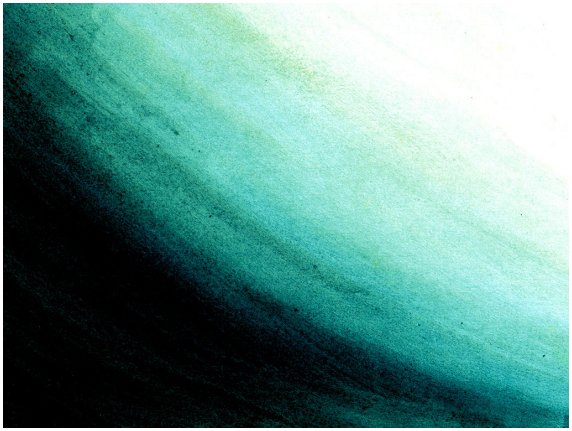

दुनिया की तख़लीक़ का पहला दिन : रौशनी

इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। अभी तक ज़मीन वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो रौशनी पैदा हो गई।

अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का।

शाम हुई, फिर सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

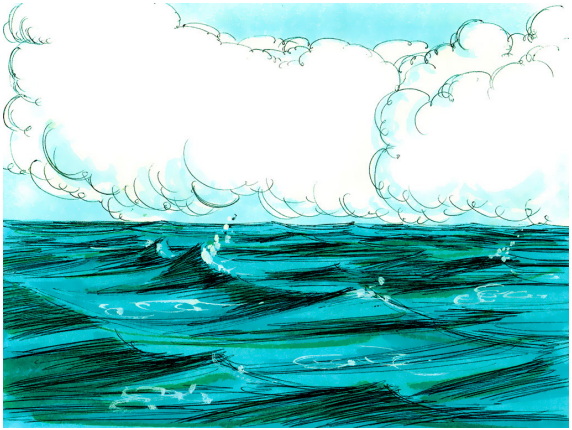

दूसरा दिन : आसमान

अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया।

शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

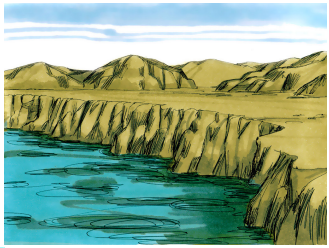

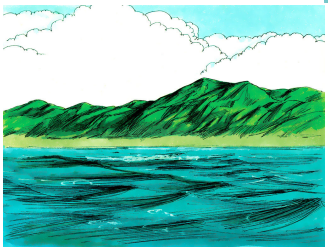

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौधे

अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का।

और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।

फिर उसने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौधे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ। ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौधे जो

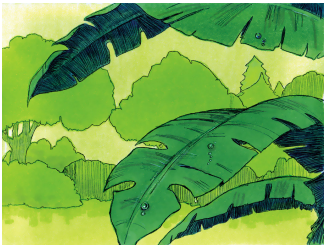

अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे।

अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।

शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।" ऐसा

ही हुआ। अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों को भी बनाया। उसने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें।

अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।

शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन गुज़र गया।

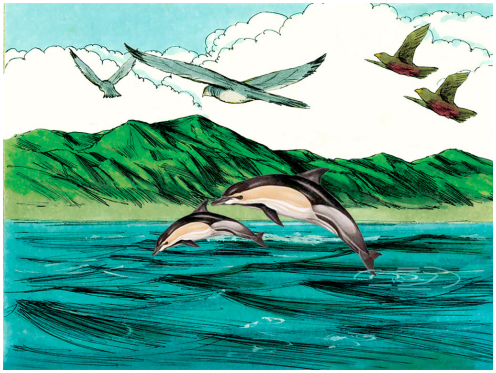

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़ज़ा में परिंदे उड़ते फिरें।” अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए।

अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।

उसने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिंदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।”

शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और इनसान

अल्लाह ने कहा, "ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर।" ऐसा ही हुआ।

अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए।

उसने देखा कि यह अच्छा है।

सवाल

- **अल्लाह ने दुनिया को पहाड़ों, बादलों, पौधों और जानदारों समेत किसके वसीले से बनाया?**

  ► उसने सब कुछ अपने कलाम के वसीले से ख़लक़ किया। उसने फ़रमाया कि वह पैदा हो जाए, और वह यकदम पैदा हुआ। जहाँ कुछ नहीं था वहाँ वह अपने कलाम से सब कुछ वुजूद में लाया। यों हज़रत दाऊद बादशाह ज़बूर में फ़रमाता है,

> ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं। क्योंकि उसने ज़मीन की बुनियाद समुंदरों पर रखी और उसे दरियाओं पर क़ायम किया। (ज़बूर 24:1-2)
>
> उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उसने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ायम हुआ।
> (ज़बूर 33:9)

- **जो कुछ अल्लाह तआला ने बनाया, वह कैसा था?**
  - ► वह बहुत अच्छा, निहायत उम्दा और शानदार था। ख़ुदा ने सब कुछ अच्छा और ख़ूबसूरत बनाया। अगर ध्यान दिया जाए तो इतने बेशुमार क़िस्म के जानदार और पौधे इस दुनिया में होते हैं कि इनसान हैरान रह जाता है। सबसे छोटा फूल रंगारंग और सुंदर होता है, सबसे छोटा परिंदा अजूबा है। यह देखकर इनसान हक्का-बक्का रहकर ख़ालिक़ की तमजीद करता है।

इनसान की तख़लीक़

अल्लाह ने कहा, **“आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे।** वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।”

फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तशकील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

आदम और हव्वा बाग़े-अदन में

रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्के-अदन में एक बाग़ लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा जिसे उसने बनाया था। रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िंदगी बख़्शाता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। अदन में से एक दरिया निकलकर बाग़ की आबपाशी करता था।

रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़े-अदन में रखा ताकि वह उसकी बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे।

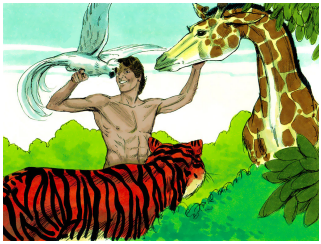

रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।”

रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले जानवर और हवा के परिंदे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। आदमी ने तमाम मवेशियों, परिंदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के नाम रखे।

लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला। तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उसने उसकी पसलियों में से एक निकालकर उसकी जगह गोश्त भर दिया। पसली से उसने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया।

उसे देखकर वह पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है।”

आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों की माँ बन गई। इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था।

लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

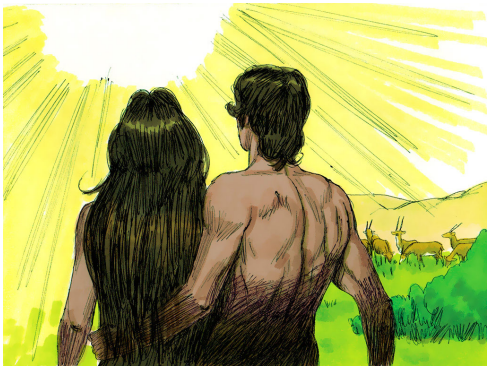

यों **अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर।** उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। **अल्लाह ने उन्हें बरकत दी** और कहा, "फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिंदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।"

अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है।

शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया। अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग़ होकर आराम किया।

यह आसमानो-ज़मीन की तख़लीक़ का बयान है।

सवाल

- **आख़िर में जब तमाम जानदार और पौधे पैदा हो चुके थे तो ख़ुदा ने इनसान को बनाया। उसने उसे मर्द और औरत की सूरत में बनाया। यह उसकी मरज़ी बल्कि गहरी ख़ाहिश थी कि हम वुजूद में आएँ। रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तशकील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ। ख़ुदा के दम यानी रूह से इनसान जीने लगा। उसने हमें किस सूरत पर बनाया?**

  ► अपनी सूरत पर। इससे हम इनसानों को अल्लाह की तरफ़ से ख़ास इज़्ज़त हासिल हुई है। यों ज़बूर में लिखा है,

> तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे? तूने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया, तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया। तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया। (ज़बूर 8:4-6)

इस ज़बूर से मालूम होता है कि अल्लाह तआला के लिए हर एक इनसान अहम है, वह हर एक की क़दर और फ़िकर करता है। एक और ज़बूर में लिखा है,

> ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका ख़याल रखे?
> आदमज़ाद कौन है कि तू उसका लिहाज़ करे?
> (ज़बूर 144:3)

इस बड़ी इज़्ज़त के बाइस ख़ुदा की तमजीद हो।

> ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना
> शानदार है! (ज़बूर 8:9)

- **ख़ुदा ने इनसान के लिए एक आला क़िस्म का बाग़ लगाया ताकि उसकी हिफ़ाज़त की जाए और उसकी ज़रूरियात भी पूरी हो जाएँ। इस बाग़ की एक बात बहुत ख़ास थी। वह क्या?**
  - ► वहाँ हज़रत आदम और हव्वा का ख़ुदा के साथ सीधा और बराहे-रास्त राबता था। वहाँ उन्हें न सिर्फ़ हर ज़रूरी चीज़ मुहैया थी बल्कि वह बराहे-रास्त ख़ुदा के साथ बातें कर सकते थे।
- **अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को कुछ ज़िम्मेदारियाँ भी सौंपीं। वह क्या थीं?**
  - ► आदम को ज़मीन की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करनी है। साथ साथ उन्हें बताया जाता है कि वह तमाम जानदारों को नाम दें।

- **इसमें हज़रत आदम क्या किरदार रखते हैं?**

  ► वह ज़मीन पर अल्लाह के नुमाइंदा हैं। ख़ुदा के नज़दीक हम उसके नुमाइंदे होने के क़ाबिल हैं। जिस तरह आदम को यह ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए आज़ादी दी गई उसी तरह वह हमें भी आज़ादी बख़्शता है। यों ज़बूर में लिखा है,

> तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया, ख़ाह भेड़-बकरियाँ हों ख़ाह गाय-बैल, जंगली जानवर, परिंदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर चलनेवाले बाक़ी तमाम जानवर। (ज़बूर 8:6-8)

फिर भी जो कुछ आदम करते हैं उसमें वह अल्लाह के सामने ज़िम्मेदार ठहरते हैं। इसलिए ख़ुदा ने उन्हें आज़माने के लिए एक ख़ास चीज़ बाग़ में लगाई। वह क्या थी?

► एक ख़ास दरख़्त जिसका फल खाना मना था : वह दरख़्त जिसका फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है।

- **ख़ुदा हज़रत आदम और हव्वा को बरकत देता है। इसका क्या मतलब है?**

► अल्लाह की मरज़ी है कि इनसान ख़ुशहाल रहे, कि उसकी तमाम ज़रूरियात पूरी की जाएँ। लेकिन इससे बढ़कर वह चाहता है कि इनसान का ख़ालिक़ के साथ अच्छा रिश्ता हो। शुरू ही से वह चाहता है कि इनसान उससे रिफ़ाक़त रखे। बाग़े-अदन में हज़रत आदम और हव्वा की अल्लाह तआला के साथ रिफ़ाक़त अच्छा और गहरा था।

आज भी हक़ीक़ी ख़ुशहाली इसी में होती है कि हम ख़ुदा से अच्छी रिफ़ाक़त रखें, कि कोई गुनाह इसमें मुदाख़लत न करे। तख़लीक़ के वक़्त सब कुछ अच्छा और कामिल था। हर तरह से सलामती थी, और इनसान ख़ुदा की क़ुरबत में रहता था। अल्लाह तआला आज भी चाहता है कि हम उसकी क़ुरबत हासिल करें, कि हमारा उसके साथ रिश्ता बहाल हो। वह हमारी रखवाली करना, हमारी ज़रूरियात पूरी करना चाहता है—इस दुनिया में होते वक़्त भी और मौत के बाद भी।

- **सातवें दिन अल्लाह ने आराम किया। क्या वह थक गया था? क्या वह थका-हारा था?**

  ► हरगिज़ ऐसी कोई बात नहीं थी। ख़ुदा ने देखा कि हर चीज़ निहायत उम्दा और अफ़ज़ल है। किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है जिसे ख़लक़ करना है।

- **क्या दुनिया आज तक भी इसी तरह अच्छी है? क्या आज तक हमारा ख़ुदा के साथ ऐसा क़रीबी रिश्ता है, ऐसी गहरी रिफ़ाक़त है? क्या हम और पूरी दुनिया आज तक मुकम्मल तौर पर अच्छे हैं?**

  ► बेशक ऐसा नहीं है। बहुत-सारी चीज़ें कमज़ोर और नाक़िस नज़र आती हैं। अच्छे और बुरे लोगों दोनों से बुरी हरकतें होती रहती हैं।

यह किस तरह हुआ?
क्या अल्लाह तआला या उसकी मरज़ी बदल गई?
या क्या हम इनसान बदल गए?